भगवत् कृपा

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संग पत्रिका

वर्ष 18 अंक : 4 | बुधवार, 26.4.1995 | वार्षिक चंदा : 50.00

आयी..... प.पू. स्वामिजी की जंयती.....4 मई

धन्य हो करूणानिधि पूर्ण पुरूषोत्तम भगवान स्वामिनारायण को जो कृपा करके स्वयं धरती पर आए- अपने रहने के धाम मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी को भी साथ लाए और इससे भी अधिक हम सब पर अनोखा अनुग्रह किया कि स्वयं जैसे ही समर्थ गुणातीत स्वरूपों - उनमें स्वयं ही तत्व से विराजमान रहकर गुणातीत परम्परा अखंडित रखकर सनातन मंगल प्रगटाया, अनाथपन मिटाया, चैतन्य का दारिद्रय काटा.....

श्रीजी महाराज के अखंड धारक ब्रह्मस्वरूप प.पू. काकाजी को तो हम सभी ने निहारे, उनके जीवन का सच्चा-अनोखा आनंद पाया अनुभव किया। अनकी गोद में हम पले। आज भी वही तत्व प्र.ब्र.स्व. प.पू. पप्पाजी, प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी, प.पू. अक्षरविहारी स्वामिजी, प.पू. साहेब, प.पू. दिनकरभाई जैसे स्वरूपों के रूप में हमारे समक्ष दर्शन, सेवा, समागम का अत्यधिक लाभ देकर हमें निरन्तर जीवभाव से ब्रह्मभाव के मार्ग की ओर ले जाने का अविरत परिश्रम कर रहा है... इन्हीं ज्योतिर्धरों में से एक दिव्य विभूति **प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी की जयंती का दिन यानि 4 मई नजदीक आ रहा है, जो बड़ौदा (गुजरात) में खूब धूमधाम से मनाया जाएगा।**

ऐसे गुणातीत स्वरूपों खुद के जीवन में पल - पल प्रभु का ही बल लेकर हमें एक दिव्य व अलौकिक जीवन का दर्शन कराते हैं। स्वयं अत्यधिक समर्थ होते हुए भी हर एक प्रसंग पर वे स्वयं भी 'भजन' का ही उपाय लेकर मानवकक्षा की मर्यादा में ही जीकर हमारे लिए आर्दश रखते हैं और हमें भी सभी समस्याओं की अक्सीर दवा - रामबाण इलाज के रूप में **भजन** ही करने कहते हैं। रिद्धि-सिद्धि ऐश्वर्यों-सामर्थ्य के सम्राट होते हुए भी खूब छूपे रहकर सारे कार्य वे ही सिद्ध करते हैं पर यश का मुकुट हमारे माथे पर पहना देते हैं कि तुम्हारे भजन से हो गया! ऐसे गुणातीत पुरूषों की हमारे प्रति की अगाध छुपी प्रीति की परिश्रम की, हम कभी कल्पना भी कर पायेंगे भला ?

गुणातीत समाज के मुमुक्षुओं को अधिकतर एक प्रश्न सहज रहा करता है कि भजन में प्रार्थना क्या करनी ? कैसे करनी ? भजन में खूब विचार क्यों आते हैं ? मन स्थिर क्यों नहीं रहता वगैरह अनेक प्रश्न उठते रहते हैं..... प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी ने हम सभी के लिए खूब करूणा करके वर्षों पहले भजन के समय क्या प्रार्थना करनी चाहिए वह एक कथावार्ता में बताया था.....'चिन्मयधोध' नाम की गुजराती पुस्तक में लिखी गई प.पू. स्वामिजी की इस परावाणी का हिन्दी अनुवाद यहां प्रस्तुत है। इस तरह से प्रार्थना करने की यदि कोई भी मुमुक्षु जीवन की जरूरी आदत ही बना लेगा तो गुणातीत स्वरूपों जरूर उसके हर व्यवहारिक समस्याओं, आन्तरिक कुरूक्षेत्र, प्रकृति स्वभाव की उलझनों - अंधकार में से निकाल कर जीव में शांति-शांति कर देंगे। हमें अनुभव भी होगा कि हमारी प्रार्थना के फलस्वरूप प्रभु ने सारा (**सेटिंग**) कर दिया है.....

प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी कई बार कहते हैं कि हर एक संबंध वाले की प्रभु की ओर की यात्रा निर्विध्न, सहज, सरल, सुगम और तीव्र बने तो वह ऐसे भजन द्वारा ही संभव है। तो आईये, प.पू. स्वामिजी द्वारा भजन पर की गई कथावार्ता पर मनन-चिंतन करके सुरूचि से उसे अपने जीवन में उतारने का प्रयास करें.....

हम ध्यान-भजन करने बैठें, तब उसमें अच्छे व बुरे संस्कारों का दर्शन होता है। उसी का नाम ही सच्चा भजन !

बुद्धिप्रधान सेवक को अच्छे व बुरे संकल्प-विकल्प उठते हैं। प्रीतिप्रधान सेवक को अनंत प्रकार की अपेक्षाओं का दर्शन होता है। विश्वासप्रधान सेवक को घोर अंधकार दिखाई पड़ता है। दासत्व प्रधान सेवक को शून्य अवस्था आती है। क्या हो रहा है, उसका उसे पता ही नहीं चलता। इन चारों में से अपने अंग को ढूंढकर उसके मुताबिक पहचान लेना..... फिर भजन करते - करते यह चार निम्न भावनाएँ रखनी।

पहली भावनाः- हे महाराज ! हे स्वामि ! हे गुणातीत पुरूषों ! आपको ही याद किया करना है, आपको ही साथ देना हैं। आपके बल से ही जीना है, आपकी प्राप्ति हो गई इसलिए हम पूर्णकाम हो गए, आपके संबंध से मै अक्षरधाम का ही हूँ - सो मुझे ऐसा बल दो कि मैं आनंदसहित भजन कर पांऊ। हे महाराज ! मुझे ऐसा बल दो जिससे कि वच.ग.म. 50 के मुताबिक सर्वोपरि प्रीति एक आपके प्रति ही रहे। मेरे और आपके बीच कोई व्यक्ति, पदार्थ या प्रसंग बंधनरूप ना बने और उसके आकार रूप में ना हो जाऊं। आप ही एक सर्वोपरि रीत से मेरे चैतन्य के भीतर विराजमान रहो और उसमें आपको सम्पूर्ण साथ दे पाऊं, ऐसा कर देना।

हे प्रभु ! मेरी देह, मन-बुद्धि और अंतःकरण को ना गिनकर आपको ही याद करना है। तो-मेरे इस देहरूपी समग्र तंत्र को जलाकर, उसकी राख करके, उस राख पर बैठकर मैं तुम्हें याद किया करूं, ऐसा बुद्धियोग मुझे जरूर से देना।

चाहे कैसे भी बुरे संकल्प या विचार उठें, चाहे कैसा भी घोर अंधकार या उदासी छाये और चाहे कैसा भी भयंकर तांडव क्यों न हो, इन सभी प्रकार के देहभाव को गिने बिना- यानि केवल उनकी उपेक्षा करके आपको ही याद किया करूं। वर्षों से तो हम अपने मनबुद्धि के ही ताल से नाचते हुए आए हैं। अब तो आपके भगवदी संतों-मुक्तों के जँचते में ही वर्तकर, चौबीस घंटे की हर एक सैकंड आपको याद करते-करते ही जीना है।

दूसरी भावनाः- भीतर में रहे 51 भूतों का.... हे महाराज ! हे स्वामी ! हे गुणातीत पुरूषों ! मेरे मन बुद्धि का, व्यवहार का, समझदारी का, सेवा का, शक्ति का, सूझ का या ऐसा कोई भार मेरे सिर पर रखकर घूमा ना करूं। केवल आपके बल से व आसरे जीऊं, ऐसा आप कर देना। जिसके फलस्वरूप आपकी प्रसन्नता के लिए मेरे से सेवा सहज ही हुआ करे। मन-बुद्धि के बोझ में मैं दबा ना रहूँ, उसके आकाररूप ना हो जाऊं। आप ही सब कर रहे हो, दूसरों में प्रवेश करके भी आप ही मेरे लिए कर रहे हो और आपके ही यह सब स्वरूपों हैं। इन सब की सेवा से आप ही राजी हो रहे हो, आपकी ही सेवा हो रही है- ऐसी भावना अखंड आप मेरे में रखवाना।

मेरा भोलापन या हद से ज्यादा सयानापन सुहृद्भाव का खंडन ना करे और अगर ये चीज़े खंडन करने का प्रयत्न भी करे तो तब मन को साथ दिए बिना सेवा करता ही रहूँ ऐसा बल देना !

तीसरी भावनाः- यह रखनी..... हे महाराज ! हे स्वामी ! हे शास्त्रीजी महाराज ! हे योगीजी महाराज ! हे गुणातीत पुरूषों! किसी भगवदी संत और मुक्त को मैं मेरा आदर्श रखकर जीऊं। ऐसे बड़े संतों व हरिभक्तों के पास मैं खूब सरल वर्तुं। ऐसे भगवदी मुक्त के साथ खूब खुले दिल से संबंध दृढ़ कर सकूं। हम आपस में एक दूसरे के विश्वास से झूझें और प्रार्थना करें-ऐसा बल देना। ऐसे भगवदी संतों, हरिभक्तों के पास कभी भी कोई संजोगों में मेरे मन बुद्धि का दिखावा ना रखूं। मेरी करी जल्दबाजी में कोई मुझे रोकने आए तब मैं तुरन्त पीछे हट कर पाऊं-सहजता से कर पाऊं। आपका स्वीकार करके आनंद में रहूँ और अगर किसी समय पर मेरे मन बुद्धि को बुलेट लगे, खूब दुःख हो, गुस्से में आ जाऊं और भीतर की इस सफाई के समय समझने के बजाय उल्टा ले लूं तब आप मुझे बल देना कि मैं आपको ही साथ दूं। भले आपको बुलेट मारनी हो तो मारना, परन्तु हे महाराज ! मेरी अहंता व ममता को चूर-चूर कर देना और आप एटम बम्ब जैसे धड़ाके करके जल्दी तोड़ देना। मुझे इसका तनिक भी बोझ उठाकर घूमना नहीं है। भगवदी संतों और हरिभक्तों तो निर्दोष ही हैं। उनका कोई दोष ही नहीं है। आप मुझे ऐसी बुद्धि दो, सूझ दो कि मैं बडों को साथ दे पाऊं। मैं भले बुरा मानूं-रोऊं तो भले रोऊं, दुःखी होऊं तो भले दुःखी होऊं, परन्तु आप दया लाये बिना आपका काम करते ही रहना। मुझे किसी के प्रति भावफेर नहीं हो और भगवदी के साथ मेरी प्रीति दिन-प्रतिदिन बढ़ती ही जाए, ऐसी सुरुचि आप मेरे चैतन्य में अखंड रखवाना।

चौथी भावनाः-यह रखनी कि-आपके संबधं से मैं अक्षरधाम का हूँ। अनंत ब्रह्मांड का आधार, प्रेरक, प्रवर्तक तू है। अनंत कोटि बह्मांड में किसी को ना हो पाए, ऐसी सर्वोपरि प्राप्ति मुझे हुई। तो आपके अल्प संबंध वाले या भूले चूके भी स्वामिनारायण का नाम लेने वाले के पास मैं झुक जाऊं , सह पाऊं। मेरे देह, मन और बुद्धि की सर्व प्रकार से उपेक्षा करके मुक्तों के साथ सुहद्भाव रखूं।

-ऐसे मुक्तों का दर्शन, वह आपका ही दर्शन है।
-ऐसे मुक्तों की सेवा, वह आपकी ही सेवा है।
-ऐसे मुक्तों का समागम, वह आपका ही समागम है।

ऐसे भाव से इन मुक्तों के साथ मिलजुल जाऊं। ऐसी आप मुझे सूझ देना। कोई सुहृद्भाव रखे या न रखे पर मैं सुहृदभाव रखूं ही। मुझे ऊपर से ऐसा लगता हो कि मेरी उपेक्षा हो रही है या कोई हठ, मान ईष्या के कारण या कोई वैर की वृत्ति के कारण या ज्यादा सयानेपन की वृत्ति के कारण मैं ऐसे कई प्रकार के विचारों में डूब जाऊं, परन्तु हे महाराज!

आप मुझे सजाग करना कि ऐसे मुक्तों की सेवा से मैं जरा भी दूर ना हटूं। ऐसे मुक्तों के साथ सचमुच ओतप्रोत होकर मुझे सेवा कर ही लेनी है- इसलिए मुझे बल देना कि मैं झुकता हो जाऊं व सहन करता हो जाऊं।

- मुक्तों आपके स्वरूप हैं।
- मुक्तों आपकी किरणों हैं।
- मुक्तों आपके प्राण हैं।

ऐसे एक अद्भुत भाव से या सुहृद्भाव से ही सब के साथ उठाव लूं, इसमें मेरे जड़बुद्धि के बंधन यदि विक्षेप करें, साथ ना दें तब भी उन सब की उपेक्षा करके मैं केवल सेवा और सुहृदभाव में अखंड तत्पर रहूँ, ऐसा मुझे बल देना।

हमें ये चार प्रकार की भावनाएँ भजन में रखनी है। सुबह की पूजा के समय परिक्रमा करते हुए व रात को सोते समय ये चार भावना रख कर दिल की सच्चाई से भजन कर लेना चाहिए। प.पू. काकाजी के मुख से हमने अनेक बार रात की प्रायश्चितरूप प्रार्थना की गरिमा के बारे सुना था।

कम से कम 20 मिनट भजन करने के बाद पाँच-दस मिनट तक जरूर प.पू. स्वामिजी द्वारा बताई इन भावनाओं की जुगाली करनी।

हम सभी जानते हैं कि सभी गुणातीत स्वरूपों को भजन अत्यधिक प्रिय है। तो प.पू. स्वामिजी की जयंती के सुवर्ण अवसर पर हम सब दिल की सच्चाई से नियमित रूप से भजन करने कृतनिश्चयी बनें और सच्चे अर्थ में प.पू. स्वामिजी की जयंती मनायें.....

✡✡✡✡✡

स्वामी की बातें

415. .... कुम्हार हांडी बनाते समय अंदर की तरफ से हाथ से सहारा देता है और बाहर से ठोकता है। उसी प्रकार हमें अंदर के सहारे की जगह पर महिमा समझनी और बाहर के मार की जगह पर साधन समझना।

प्र - 5,197

416. भगवान का माहात्म्य सहित निश्चय होने पर कुछ करना शेष रहता नहीं। हाँ माहात्म्य की आड़ लेकर पाप नहीं करना और हमें प्रगति होती दिखाई नहीं पड़ती, लेकिन सब कुछ धीरे - धीरे होता जाता है और यही रीत है। जैसे बाजरे के पौधे में पहले दाने नहीं दिखाई पड़ते, परन्तु बाली आती है, बाद में दाने दिखाई पड़ते हैं यूं होता है। *प्र - 5,198*

417. प्रभु मिले हैं सो किसी बात की चिंता नहीं है और संकल्पों यानि-परिपक्व विचारों को ज्ञान से उड़ा देना। तप से क्रोधी बनते हैं। पहले दुर्वासा ऋषि वगैरे तप कर-करके क्रोधी हुए थे.....

प्र - 5,199

418. भगवान के भक्त का दोष विचारें तो जीव भ्रष्ट हो जाता है। सो गुण विचारना और नारद आदि को जो लांछन लगे कहे जाते हैं, वे तो विपरीत संजोग के कारण लगे और भगवान की माया का बल है, यूं समझना। परन्तु ये सभी तो अच्छे थे, बड़े थे व कई जीवों का कल्याण किया है, वे गुण विचारना।

प्र - 5,201

419. परछाई को पकड़ नहीं सकते, यू ही विषय का पार नहीं आता। इसलिए ज्ञान हो, तभी सुख होता हैं।

प्र - 5,202

420. भगवान हैं, वे एक अंक के बराबर हैं और साधन है वे शून्य की जगह है। आगे एक लगाये बिना कितने शून्य लगायेंगे कोई कीमती नहीं बनती.....

प्र - 5,203

421. आज्ञा और उपासना - यह दो रखना। वैराग्य और आत्मनिष्ठा तो किसी में ज्यादा होगी और किसी में थोड़ी होगी ! प्र - 5,204

422. मंदिर में दर्शन करते समय बोलो कि - इस मूर्ति से ऊपर कोई नहीं, यूं समझना। हमारे कहने से भी भटक नहीं जाना और हम तो परिस्थिति देखकर या किसी जीव के कल्याण के लिए भले ही कुछ कहें! वह हमारा भी मानना नहीं। उस पर नित्यानंदस्वामी का दृष्टांत दिया कि महाराज के पटाने पर भी अटल रहे। आखिर प्रसन्न होकर महाराज ने हार दिया।

प्र - 5,205

423. सब कुछ यहीं है और यहां जो अक्षरधाम है, उसमें भगवान हैं..... प्र - 5,206

424. ज्ञान प्रलय करने से बढ़ कर कोई बड़ी बात नहीं। इसलिए ज्ञान प्रलय करना। जितना ज्ञान प्रलय किया, उतनी माया से मुक्ति है और यह करे बिना बड़पन्न तो मिले, परन्तु माया से मुक्ति नहीं मिलती। यह ज्ञान प्रलय क्या ? प्रकृति के कार्यमात्र को हृदय में से निकाल कर ब्रह्मरूप होना, गुणातीत होना। फिर कुछ करना शेष नहीं रहता और महाराज का सिंद्धात भी यही है। प्र - 5,207

'यज्ञानां - जपयज्ञोस्मि'

प.पू. काकाजी के मुख से सभी ने गीता में भगवान कृष्ण द्वारा कही उक्ति 'यज्ञानां जपयज्ञोस्मि' कई बार सुनी है। सच ! प.पू. काकाजी जपयज्ञ का मूर्तस्वरूप थे और जपयज्ञ उन्हें अत्यधिक प्रिय था.....हम सभी ने निरंतर उन्हें भजन करते हुए देखा भी था।

सो, जैसा कि आप सभी को विदित है कि पिछले 4 साल से प.पू. काकाजी की जंयती निमित्त अनिर्देश में एक महिने जपयज्ञ का अनुष्ठान रखा जाता है।

इस बार भी,

दिनाँक 13 मई '95 शनिवार से 13 जून '95 मंगलवार तक सुबह ठीक 6.30 से 8.30

जपयज्ञ का कार्यक्रम रखा गया है, जिससे प.पू. काकाजी की लगातार स्मृति रहे और वर्षभर के लिए सभी भक्तों की भजनरूपी बैटरी चार्ज हो जाएगी।

आप सभी को इस अनमोल भजन, स्मृति, समागम के लाभ के लिए हार्दिक निमंत्रण है।

सत्संगी विद्यार्थियों को पुरस्कार.....

आप सभी को जानकर आनंद होगा कि उत्तरभारत अर्थात दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, जम्मू-कश्मीर, पंजाब, हिमाचल प्रदेश आदि में स्थित पहली से बारहवीं कक्षा के सत्संगी छात्र-छात्राएँ **जो नियमितरूप से सत्संग की सभाओं में व संतों-संत बहनों के सम्पर्क में रहकर मंदिर या सत्संग केन्द्र में आते हों,** उनमें से जिन्होंने-अपनी कक्षा में प्रथम या द्वितीय स्थान प्राप्त किया हो

या

85 प्रतिशत या उससे अधिक अंक प्राप्त किये हों-उन प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को योगी डिवाईन सोसाईटी, दिल्ली द्वारा पुरस्कृत किया जायेगा।

सभी योग्य सत्संगी विद्यार्थियों से निवेदन है कि वे अपने परीक्षा-फल की प्रमाणित फोटोस्टेट प्रति निम्मलिखित पते पर 1 जुलाई 1995 तक जमा कराने की कृपा करें।

योगी डिवाईन सोसाईटी

अनिर्देश, अशोक विहार -III, स्वामिनारायण मार्ग, काकाजी लेन, दिल्ली - 110 052

व्रतोत्सवसूची

1)	दि. 4-5-95	गुरूवार	प्र. ब्र.स्व.प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी की जयंती
2)	दि 11-5-95	गुरूवार	एकादशी व्रत
3)	दि. 13-5-95	शनिवार	**अनिर्देश में आज से एक माह के जपयज्ञ का प्रारम्भ रोज सुबह 6.30 से 8.00**
4)	दि. 25-5-95	गुरूवार	एकादशी,व्रत
5)	दि. 26-5-95	शुक्रवार	ब्र.स्व. योगीजी महाराज का प्रागट्य दिन

PUBLISHED BY PRABHAKAR RAO FOR YOGI DIVINE SOCIETY-DELHI
'ANIRDESH' Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110052 (India) Tel.: 7229327, 7249327
Printed at : **Chowdhry Mudran Kendra** 12/3, Sri Ram Marg, South Maujpur, Delhi-110 053